Sukhdeo - 11 September

Q- How was overseas trade organised in South India up to 300 AD? Discuss this with special reference to Roman trade and point out its impact on Indian economy? [30 M]

उत्तर - प्राचीन काल से ही भारतीय उपमहाद्वीप का जुड़ाव हिन्द महासागर व्यापार तंत्र से रहा है। विद्वानों के अनुसार, इस व्यापार को बढ़ाने को व्यापकतर राजनैतिक, आर्थिक, सामाजिक, धार्मिक, सांस्कृतिक कारकों की ही भूमिका रही है अपितु सामुद्रिक तकनीक, नौका निर्माण, नौवहन तकनीक, जहाजरानी के संगठन के साथ विविध संस्थाओं की भी भूमिका रही है, जिसके तहत विभिन्न क्षेत्रों के विभिन्न व्यापारिक समूहों का जुड़ाव व भूमिका रही।

मौर्योत्तर काल में भी उक्त व्यापारिक गतिविधियों में महत्वपूर्ण विस्तार हुआ जिसका प्रमुख कारक मौद्रिक अर्थव्यवस्था का विस्तार तथा कुषाणों व सातवाहनों द्वारा छोटे मूल्य वाले सिक्कों को निर्गत करना प्रमुख था।

यदि दक्षिण भारत की बात की जाये तो विशेषतः संगम काल (300 BCE - 300 AD) के काल में तमिल क्षेत्र में भारत - रोमन सामुद्रिक व्यापार में अभूतपूर्व वृद्धि हुई। संगम ग्रन्थ व कविताओं में यवनों द्वारा लौंग व शराब को जहाज में लाने व काली मिर्च लेकर जाने की खूब चर्चा मिलती है। यह सामुद्रिक व्यापार

Scanned by CamScanner

को बढ़ावे में निम्न कारकों की भूमिका रही -

1- रोमनों द्वारा मिस्र पर विजय पर पश्चात, सामुद्रिक व्यापार पर अरबों के एकाधिकार को तोड़ना तथा मसालों के व्यापार में प्रवेश करना,

2- 45 AD में हिप्पालस द्वारा मानसूनी पवनों की खोज से दक्षिण भारत व पश्चिम के मध्य सामुद्रिक व्यापार को बढ़ावा, इसके तहत मुजिरिस व अन्य दक्षिण भारतीय बन्दरगाहों का सीधा प्रवेश भूमध्यसागर से हुआ, अब कि तटीय रेखा के सहारे चलते हुए जहाजों को दूरी तय नहीं करनी पड़ती थी।

3- पाश्चिमी विश्व व रोम में भारतीय मसालों विशेषत: काली मिर्च, अदरक, हल्दी की मांग का उच्च होना। प्लिनी द्वारा भी इसका वर्णन किया गया है

4- रोमनों विशेषकर महिलाओं में चीनी मोती व मलमल के उत्कट लगाव।

5- चीनी सिल्क की भारी मांग का होना, जिसके लिए भारत मध्यवर्ती राष्ट्र के रूप में काम करता था। विशेषकर मौर्योत्तर काल में चीनी सिल्क दर के स्थल मार्ग के मध्य एशिया वाले मार्ग में थोड़ी बाधाएं आयीं, इसके चलते अधिकांश व्यापार दक्षिण भारतीय बंदरगाहों से होने लगा

6- इलायची, काली मिर्च आदि की चिकित्सकीय उपयोग में मांग के चलते व्यापार में वृद्धि

रोमनो से होने वाला यह व्यापार सम्राट ऑगस्टस (27 BCE - 14 CE) से लेकर मार्कस ऑरेलियस के काल तक लगभग द्वितीय शताब्दी के अन्त तक जारी रहा। इसके पश्चात विभिन्न कारकों के चलते इसमें कमी आयी हालांकि यह पूर्णत: ~~सम्माप्त~~ समाप्त नहीं हुआ। इसके तहत ना केवल बड़ी मात्रा में रोमन सिक्कों को भारत में भेजा गया अपितु अनेक रोमन बस्तियों, रोमन मृदभाण्डों तथा रोमन संस्कृति का भी प्रसार दक्षिण भारत में हुआ। वर्तमान में इसे बड़ी मात्रा में रोमन सिक्के पश्चिम भारत, पश्चिमोत्तर व उत्तर भारत में मिलते हैं, विशेषकर आन्ध्र से तमिलनाडु में कोयम्बटूर व कृष्णा घाटी क्षेत्र में, अरिकमेडु से भी रोमन व्यापार की पर्याप्त जानकारी मिलती है।

भारतीय अर्थव्यवस्था पर इसके प्रभावों को निम्न बिन्दुओं के तहत देखा जा सकता है -

1 - विदेशी व्यापार संतुलन भारत के पक्ष में होने के चलते भारत में भारी मात्रा में बुलियन का आगमन। उल्लेखनीय है कि रोमन शीशे व शराब की तुलना में भारतीय मसालों व वस्तुओं की बड़े पैमाने पर मांग रोम में थी। इसके चलते लाभ भारत के पक्ष में रहा। प्लिनी द एल्डर जैसे

इतिहासकार भी इसकी पुष्टि करते हैं। उनके अनुसार, भारत से व्यापार के चलते रोम को प्रतिवर्ष लगभग 5 करोड़ सेस्टर्स (रोमन सिक्का) की हानि हो रही है, क्योंकि भारत से जो सामान भेजा जाता है वह अपने मूल दाम से 100 गुना महंगा होता है।

2- व्यापार में आर्थिक लाभ के चलते विभिन्न व्यापारी वर्गों, श्रेणियों व संगठनों का विकास

3- ऋण देने व लेने वाली संस्थाओं व व्यक्तियों का विकास

4- अनेक वाणिज्यिक नगरों का उत्थान जैसे- अरिकमेडु, उरैयूर, कावेरीपत्तनम आदि

5- भारत, अरब, भूमध्यसागर को जोड़ने वाले सामुद्रिक व्यापारिक मार्ग में अनेक बंदरगाहों के विकास से आर्थिक क्रियाकलापों को बल जिसके चलते न केवल दक्षिण भारत में अपितु पश्चिम भारत आदि में भी अर्थव्यवस्था को बल मिला

6- बड़े मात्रा में सोने व चांदी के सिक्कों का विकास, इससे मौद्रिक अर्थव्यवस्था को बल।

7- व्यापार का विशिष्टीकरण व विविधीकरण।

Scanned by CamScanner

8- अनेक विद्वानों के अनुसार भारत-रोम व्यापार की भूमिका दक्षिण भारत में नगरीकरण के प्रसार में थी, यद्यपि केवल भारत-रोम व्यापार ही नगरीकरण के सन्दर्भ में महत्वपूर्ण नहीं था तथापि अन्य सामाजिक-आर्थिक कारकों की भी महत्ता थी।

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि 'भारत-रोम व्यापार' दक्षिण भारत में मौर्योत्तर काल की एक महत्वपूर्ण विशेषता थी, जिसने भारतीय अर्थव्यवस्था के विकास तथा मौद्रिक अर्थव्यवस्था के विकास में भी भूमिका निभायी।

Scanned by CamScanner